RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 60 - 63
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

कुमाऊँ से प्राप्त वैष्णव मूर्तियों का प्रतिमाशास्त्रीय अध्ययन

चन्द्रकान्ता आर्या
शोध छात्रा, इतिहास विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)

Received : 02/03/2017 *1st BPR* : 10/03/2017 *2nd BPR* : 12/03/2017 *Accepted* : 18/03/2017

ABSTRACT

लक्ष्य की प्राप्ति हमेशा उपर्युक्त साधनों पर ही निर्भर करती है। प्रतिमा अथवा मूर्ति उसी लक्ष्य की उद्देश्यपूर्ति का साधन हैं। प्रतिमा के लिए वैदिक, पुराणों में अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। यथा अर्चा, शिल्प, प्रतिरूप, प्रतिकीर्ति, मूर्ति पूजा की प्राचीनता के स्पष्ट प्रमाण हमें सिन्धु घाटी सभ्यता के पुरावशेषों से मिलते हैं। उत्तराखण्ड के मूर्ति निर्माण में कार्तिकेयपुर के शासकों की अग्रणी भूमिका थी। मूर्तिकला के क्रमिक विकास का यह रूप इन्हीं प्रेरणाओं का परिणाम हैं। उत्तराखण्ड संग्रहालयों में संरक्षित मूर्तियों में संख्यात्मक दृष्टि से पाषाण मूर्तियाँ सर्वोपरि हैं। कुमाऊँ के पूर्वी क्षेत्रों में प्राप्त मध्यकालीन वैष्णव देवालयों व विष्णु की मूर्तियों से तथा चन्दों की स्थानान्तरित राजधानी अल्मोड़ा में स्थापित विष्णु से सम्बन्धित देवालयों की भी संख्या अधिक है। कुमांऊ में चतुर्भुज विष्णु, स्थानक विष्णु, शेषशायी विष्णु, लक्ष्मीनारायण, दशावतारों स्तम्भ, विष्णु दशावतार पट्ट आदि प्रतिमाएं प्राप्त होती है।

धर्म मानव जीवन को एक निर्धारित लक्ष्य ज्ञान कराता है। लक्ष्य की प्राप्ति हमेशा उपर्युक्त साधनों पर ही निर्भर करती है। प्रतिमा अथवा मूर्ति उसी लक्ष्य की उद्देश्यपूर्ति का साधन हैं। प्रतिमा के लिए वैदिक, पुराणों में अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। यथा अर्चा, शिल्प, प्रतिरूप, प्रतिकीर्ति, मूर्ति पूजा की प्राचीनता के स्पष्ट प्रमाण हमें सिन्धु घाटी सभ्यता के पुरावशेषों से मिलते हैं। उत्तराखण्ड के मूर्ति निर्माण में कार्तिकेयपुर के शासकों की अग्रणी भूमिका थी। मूर्तिकला के क्रमिक विकास का यह रूप इन्हीं प्रेरणाओं का परिणाम हैं। उत्तराखण्ड संग्रहालयों में संरक्षित मूर्तियों में संख्यात्मक दृष्टि से पाषाण मूर्तियाँ सर्वोपरि हैं।[1]

चतुर्भुजी स्थानक विष्णु

कुमाऊँ में वैष्णव मतानुयायी दक्षिण ब्राह्मणों का आगमन चन्दों के शासनकाल में हुआ था। इसी प्रकार उन्हीं की प्रेरणा से यहाँ पर वैष्णव मंदिरों का निर्माण कराया गया था। कुमाऊँ के पूर्वी क्षेत्रों में प्राप्त मध्यकालीन वैष्णव देवालयों व विष्णु की मूर्तियों से तथा चन्दों की स्थानान्तरित राजधानी अल्मोड़ा में स्थापित विष्णु से सम्बन्धित देवालयों की भी संख्या अधिक है। यहाँ की सर्वसाधारण जनता भी विष्णु भगवान् की पूजा अर्चना के प्रति कोई विशेष आग्रह पाया जाता हैं। लेकिन पंचम देवापासक परम्परा के अन्तर्गत

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 60-63 , ISSN 2348 – 3318
चन्द्रकान्ता आर्या
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित देवालायों में भी देवी–देवताओं की प्रतिमाओं को प्रमुख स्थान दिया गया है।[2]

चतुर्भुज विष्णु प्रतिमाएँ

बागनाथ (बागेश्वर), चण्डिका मंदिर (पाताल भुवनेश्वर), बालेश्वर मंदिर (चम्पावत), पावनेश्वर मंदिर (पुभाऊँ), लक्ष्मी मंदिर (पुभाऊँ), बयाला मंदिर (अल्मोड़ा), आदिबदरी (अल्मोड़ा) घुसेरा, नकुलेश्वर, विशाड़ के देवालय (पिथौरागढ़) आदि।

स्थानक विष्णु प्रतिमा

विष्णु के दशावतारों के साथ अंकन होने की पुष्टि प्रायः सभी शिल्पशास्त्र एवं प्राचीन ग्रन्थ करते हैं। दशावतारों के साथ विष्णु का अंकन देश के प्रायः सभी भागों से प्राप्त होता है। अतः उत्तर भारत का उत्तराखण्ड क्षेत्र भी इस परम्परा से अछुता न रहा। जो उनकी त्रिभुजी प्रतिमा की ओर संकेत करता है तथा नृहसंहिता के वर्णन के अनुसार भी विष्णु के आठ, चार या दो, भुजाएँ होनी चाहिए।

विष्णु की विभिन्न प्रकार की मूर्तियों में सर्वप्रथम स्थानक मूर्तियाँ आती है। जिनकी संख्या उत्तराखण्ड में निःसंदेह अधिक है। हाथों में चार आयुधों की स्थिति के अनुसार विष्णु के केशवादि चतुर्विशति मूर्तियाँ होती हैं। परन्तु चतुर्विशतिमूर्तियों की कल्पना गुप्तकालीन प्रतीत होती है। इन प्रतिमाओं के हाथों में शंख, चक्र, गदा, व पद्म की स्थिति के अनुसार विष्णु की केशवादि चमुर्विशातिमूर्तियों का वर्णन अग्निपुराण, अपराजितवृच्छा, मानसोल्लास, देवतामूर्ति प्रकरण तथा रूपमण्डन में हुआ है। इनमें विष्णु समपाद स्थानक चतुर्भुज, बैजयन्तीमाला, पीताम्बर, श्रीवल्स किरीट से विभूषित पद्म पीठ पर संस्थित होते हैं।

शेषशायी विष्णु प्रतिमाएँ

''जलशायी रूप विष्णु का बड़ा ही विलक्षण रूप है। विष्णु को नारायण भी कहा जाता है। नार का अर्थ होता है जल, जल विष्णु का प्रथम स्थान है इसलिए इन्हें नारायण कहा जाता है। ''वायुपुराण'' में भी विष्णु को नारायण नाम दिया है और ''मत्स्य पुराण'' में कहा गया है कि शुक्रदेव, बृहस्पति आदि देव उन्हीं नारायण के रूप हैं। नारायण का प्राचीनतम स्त्रोत ऋग्वेद है। जिसमें प्रथम जल की चर्चा है जिसमें स्वयंभू विद्यमान थे और उन्होंने जीवों का रूप धारण किया। ध्रवबेर शयन रूप में विष्णु मूर्ति को 'जलशयन' और 'जलशायी नाम अपराजिता वृच्छा, में पद्मनाभ–मूर्ति नाम विष्णुमोतर में मिलता है।'' विष्णु के अलावा अन्य किसी देवता को जलाशयी रूप प्राप्त नहीं हुआ। चमोली से प्राप्त प्रतिमा में विष्णु को सात फन वाले नाग की शेषशैय्या पर शयन करते हुए दिखाया हैं। विष्णु के सिर पर किरीट मुकुट हैं। कानों में कुण्डल, गले में हार, घुटनों तक बैजयन्ती माला (बनमाला) तथा आजानु पीताम्बर धारण किये हैं। कमर में कटिसूत्र और मेखला युक्त जानव्लम्बी कटिवास धारण किये हैं।[3]

शेषशायी विष्णु

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 60-63 , ISSN 2348 – 3318
चन्द्रकान्ता आर्या
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिन्ह हैं। पीछे से हाथों द्वारा दक्षिणोहवर्हस्त सिर को सहारा दिये हुए हैं और वामोहर्व में चक्र लिए हुए प्रदर्शित किया गया हैं। अग्रदक्षिणहस्त में गदा और वाम हस्त में शंख धारण हैं। हाथों के निम्न भाग की कलाई में कंकण तथा हाथों के उर्ध्व भाग में भुजबन्ध उत्कीर्ण हैं। चरणों के समीप लक्ष्मी पादसंवहन मुद्रा में तथा विष्णु का पैर लक्ष्मी को गोद में रखा हुआ दिखाया गया है। लक्ष्मी को शेषनाग पर आसीन दिखाया गया हैं। बायाँ पाद विष्णु का शेषशय्या पर हैं। विष्णु पद्मनाभी पर सुखासीन लोकपितामह (त्रिमुखी) ब्रह्मा कमलासन मुद्रा में प्रदर्शित है। हिन्दू, 'त्रिमूर्ति' में ब्रह्मा का नाम प्रथम है। वे वेदों के 'धाता' तथा उपनिषदों में एक तत्व एवं आचार्य के रूप में मिलते हैं। इस चतुर्भुज ब्रह्मा को क्रमशः दक्षिणाघः वरदमुद्रा में काल।[4]

प्रतीक अक्षमाला, वामाद्य, जल का प्रतीक कमण्डलु तथा दक्षिणोहर्व पृष्ठ हस्त में श्रुवा धारण किये हुए हैं। यज्ञोपवीत एवं उदरबन्ध सुशोभित घटोदर ब्रह्मयोग मुद्रा में कमलासीन है। पितामह ब्रह्मा के बायीं ओर शान्त मुद्रा में मधु–कैटभ दिखाये गय हैं। इनके हाथों में दण्ड तथा खड्ग प्रदर्शित हैं। ब्रह्मा की सर्वप्राचीन प्रतिमाएँ मथुरा कला में ही प्राप्त हुई हैं। लक्ष्मी के शिरोभाग पर विद्याधर – मालाधर दिखाये गये हैं। विद्याधर के पृष्ठ भाग के प्रस्तर खण्ड पर कमल पंखुड़ियाँ उत्कीर्ण हैं। लक्ष्मी के पीछे की ओर पृथ्वी देवी को खड़ी अवस्था में दिखाया गया है। शेषशय्या के नीचे समुद्र में तैरती हुई मछलियों का अंकन किया गया है। विष्णु वाहन गरूड़ को मानवरूप में प्रदर्शित किया गया है जो कि दोनों हाथों पर शेषशायी विष्णु का भार लिए हुए सेवक या वाहन का।[5]

निष्ठापूर्वक पालन करते हुए दिखाया गया हैं। हाथों का अंकन नमस्कारमुद्रा में दिखाई देता हैं। गुरूकुल संग्रहालय की शेषशायी विष्णु प्रतिमा संख्या 122 (19×14 से०मी०) मायापुर (हरिद्वार) से प्राप्त यह प्रतिमा 9–10 वीं सदी ई० मटियाले रंग के प्रस्तर खण्ड पर उत्कीर्ण की गई हैं। खण्डित होने के कारण विष्णु के घुटने के नीचे का बायाँ पैर और लक्ष्मी का आवक्ष भाग ही विद्यमान होने के कारण तत्कालीन कला और भाव प्रदर्शन की दृष्टि से यह एक अद्भुत प्रतिमा लगती हैं। विष्णु को सौर मण्डल का देवता कहा गया जिससे ऊपरी परिकर के पट्ट पर नवग्रह का अंकन किया गया है।[6]

कुमाऊँ में शेषशायी विष्णु प्रतिमाएँ

बागनाथ मंदिर (बागेश्वर) विष्णु, राममंदिर गंगोलीहाट, कवीना मुहल्ला नौला (अल्मोड़ा), हरघौ मंदिर (पिथौरागढ़) के मंदिर परिसर में भी एक शेषशायी नारायणमूर्ति थी।

लक्ष्मीनारायण प्रतिमाएँ

लक्ष्मी – नारायण

गढ़वाल विश्वविद्यालय संग्रहालय की प्रतिमा सं०–65 (49x29 से0मी0) लक्ष्मी नारायण की 12वीं सदी ई0 घरासू जनपद उत्तरकाशी से प्राप्त मुगल मूर्ति चतुर्भुजी हैं। विष्णु को ललितासन् मुद्रा में, बायीं जंघा पर लक्ष्मी को विराजमान दर्शाया गया हैं तथा दक्षिणोर्ध्व हस्त में गदा, रामोहर्न में चक्र, अग्रदक्षिणाधः में पद्म कौस्तुभमणि, पुष्पकुण्डल, त्रिक्लयी कंठमाला, कंकण, कटिसूत्र और बैजयन्ती माला से भूषित दर्शाया गया हैं।[7] विष्णु की बायीं जंघा पर आसीन द्विभुजी लक्ष्मी आकर्षक जूड़ापाष, मुकुट, चक्रकुण्डल, त्रिवलयक, कंठमाला तथा पारदर्शी अधोवस्त्र से अलंकृत है। लक्ष्मी का दाहिना हाथ विष्णु के वाम स्कन्ध पर स्थित तथा लक्ष्मी वाम हस्त में शंख लिए हुए विष्णु के दाहिने घुटने पर स्थित हैं।[8] विष्णु का नाम कुंचितपाद मानवरूपी गरूड़ के कन्धे पर आधारित हैं। पादपीठिका पर मानव रूप में गरूड़ लड़ियों के हार, मुकुट, कुण्डल और कंठमाला आदि से सुशोभित है। वाहन गरूड़ दोनों हाथ फैलाये हुए उड़ती हुई मुद्रा में प्रदर्शित हैं तथा विष्णु का दक्षिणयाद अधोपार्श्व में पद्मपीठ पर तथा लक्ष्मी का वाम पद नाग शीर्ष पर अवस्थित हैं।[9]

दशावतारों स्तम्भ (विष्णु)

''गढ़वाल विश्वविद्यालय संग्रहालय की प्रतिमा संख्या 222 (54×8 से०मी०) जो कि 8वीं सदी ई० की हरे प्रस्तर निर्मित

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 60-63 , ISSN 2348 – 3318
चन्द्रकान्ता आर्या
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

आदिबद्री (चमोली गढ़वाल) से प्राप्त है। इसलिए यह स्तम्भ खण्डित है। लेकिन विष्णु के अधिकतर अवतारों का वर्णन स्पष्ट है। जो इस प्रकार है – स्तम्भ के मुखपृष्ठ के निचले स्तर पर चतुर्भुज नृ–वराह कोहनी के ऊपर पृथ्वी देवी को उठाते हुए, अद्योदक्षिण हस्त कटिप्रदेश पर, दक्षिणोहर्व गदा लिए हुए वागाद्य में शंख तथा वामोहर्न में चक्र लिए दिखाया गया है। स्तम्भ के दूसरे स्तर पर चतुर्भुज नरसिंह अवतार में दक्षिण एवं रामोर्ध्व हस्त ऊपर खड़े किये हुए तथा दो हाथों से हिरण्यकश्यप का उदर विदीर्ण करते हुए प्रदर्शित किया है।[10]

विष्णु दशावतार पट्ट

अल्मोड़ा संग्रहालय में प्रतिमा संख्या 85–51 तथा 85–52 क्रमशः (44x23) से०मी० (72–23) के दो दशावतार पठ जो कि 16वीं सदी सिस्ट प्रस्तर से निर्मित गदसेर जनपद अल्मोड़ा की प्रतिमा है। दशावतार पट प्रतिमा संख्या 85–51 (44.23) में क्रमशः वायें से मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह अवतार अंकित किये गये हैं। मत्स्यावतार में मत्स्य के ऊपर चारों वेदों के प्रतीक चार–मानव मुख और कूर्मावतार में कूर्म–पृष्ठ भाग पर दर्शाया गया है। समुद्र–मंथन कछुए की पीठ पर का दृश्य एक ओर देव तथा दूसरी ओर असुर वासुकी नाम को पकड़े हुए दिखाये गये हैं। बायें से स्थानक (खड़ी मुद्रा) मुद्रा में विष्णु का वामन रूप में बायां पैर उठा हुआ। दस भुजायें फैली हुई मानों तीनों लोकों को अपने तीन पग द्वारा नाप चुके हैं, इस सजीवता से इसे अंकित किया गया है।[11]

कुमाऊँ में भी देवालयों के अतिरिक्त जलवापियों (नौलों) में भी जल देवता के रूप में विष्णु की प्रतिमाएँ देखी जाती हैं। विष्णु भगवान के कूमवितार से सम्बन्धित माने जाने के कारण ये प्रतिमाएँ कुमाऊँ के पूर्वी क्षेत्रों में अधिक पायी जाती हैं। नौलों पर स्थापित प्रतिमाओं में विष्णु को चतुर्भुजी स्थानक मुद्रा में और शेषशायी मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। शेषशायी प्रतिमा में भगवान विष्णु को दायी से बायीं ओर लेटे हुए, सिर के नीचे रखे हुए हाथ में पघ तथा अन्य हाथों में शंख, चक्र एवं गदा को दिखाया गया है।[12] विष्णु की नाभिकमल पर कूर्चधारी द्विमुखी ब्रह्या का अंकन किया गया है। मस्तक पर शेषनाग के फनों का फैलाव दिख रहा है और वामपार्श्व में प्रफुल्लपद्य पर विष्णु भगवान के वादसंवाहन मुद्रा में लक्ष्मी जी को दिखाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. प्रसाद, जगदीशवरी, 1991 कुमाऊँ के देवालय, अल्मोड़ा पृ०सं०–25
2. शर्मा, डी०डी०, 2007 उत्तराखण्ड के लोकदेवता, हल्द्वानी पृ०सं०–110
3. शर्मा, डी०डी०, 2003 उत्तराखण्ड के धार्मिक सम्प्रदाय, उत्तराखण्ड प्रकाशन, हल्द्वानी, पृ०सं० – 226–228
4. नैथानी शि०प्र०, 1977 उत्तराखण्ड के तीर्थ और मंदिर पृ०सं०–44
5. शाह सरिता, 1999 उत्तराखण्ड में आध्यात्मिक पर्यटन तीर्थ एवं मंदिर, बिजनौर पृ०सं०–56
6. उनियाल हेमा, 2005 कुमाऊँ के प्रसिद्ध मंदिर (धर्म एवं संस्कृति एवं वास्तुशिल्प) तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ०सं० 84–86
7. सक्सेना कौशल किशोर, 1994 कुमाऊँ कलाशिल्प और संस्कृति अल्मोड़ा पृ०सं० 85
8. भण्डारकर, आ०जी०, 1965 ''वैष्णव शैविष्म एण्ड अदर माइनर रिलीजस सिस्टम'' इण्डोलाजिकल बुक हाउस, वाराणसी पृ०सं०–26
9. पाण्डे बद्रीदत्त, 1937 कुमाऊँ का इतिहास, अल्मोड़ा पृ०सं० 55
10. मठपाल यशोधर, 1992 उत्तराखण्ड की अधोतिहासिक संस्कृति तथा कला' (लेख) पहाड़ 516, नैनीताल पृ०सं० 79
11. शर्मा, डी०डी०, 2003 उत्तराखण्ड के व्यार्मिक सम्प्रदाय, उत्तराखण्ड प्रकाशन, नैनीताल रोड़, हल्द्वानी पृ०सं० –223–224
12. बलूनी दिनेशचन्द्र, 2001 उत्तरांचल संस्कृति, लोकजीवन, इतिहास, पुरातत्व बरेली, पृ०सं०–12